पद ३

(राग: कानडा - ताल: धीमा त्रिताल)

ही जीवन नौका आमुची। प्रभु-आज्ञा जलवर तरती।।ध्रु.।। काम

क्रोध मद मत्सर वादळी। डोलत जाये सवेगी।।१।। दुःख लाट

व्याधी जलडोही निर्भय चालत पुढती।।२।। सत मिथ्या सिंधू

जगरूपी। नाविक शक्ती प्रभुची ॥३॥ सिद्ध प्रार्थी या जीवन

नौकी। सारथी व्हावे प्रभुजी।।४॥